अमृत वेले 5 बजे। ओमशान्ति 9-5-68

आज सत गुरुवार के दिन अमृतवेले याद की यात्रा में सत गुरु बाप कैसे हम बच्चों को मूलवतन का अनुभव करा रहे हैं वह आप को सत गुरु बाप के महावाक्य द्वारा सा0 कराते हैं।:-

किसको देखते हो? कौन पढ़ाते हैं? क्या ब्रह्मा का आत्मा? ब्रह्मा का आत्मा देखता है? ब्रह्मा की आत्मा पढ़ाती है? कौन सुनता है? कौन पढ़ाते हैं? शिव बाबा पढ़ाते हैं यह सोच रखना चाहिए। तो पढ़ाने वाले को देखना चाहिए। आत्मा सोच करती है यह पढ़ाने वाला कौन है? क्या मनुष्य पढ़ाते हैं या आत्मा को परमात्मा पढ़ाते हैं। यह तो जरूर है शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। तुम शरीर द्वारा सुनते हो परन्तु सुनता कौन है? शरीर सुनता है या शरीर की आत्मा सुनती है? देखते हैं, कौन देखते हैं? किसको देखते हैं? बुलाते हैं हे बच्चों। कौन बुलाते हैं बच्चे किसको रेसपाण्ड करेंगे। कौन देखते हैं? बाप कहते हैं नज़र से निहारो। अभी कौन सी नज़र? यह आंखों? अभी आत्मा को नज़र होती है ज्ञान की। यह सभी सोच करनी है। बाप पुकारेंगे ओ बेटे। तुम क्या कहेंगे ओ बाबा। बाबा बच्चों को पढ़ाते हैं, बच्चे बाबा से पढ़ते हैं। यह कोई मामा काका चाचा नहीं है। जिसमानी कोई चीज़ नो नहीं है ना। शिव बाबा तुम से पूछेंगे। तुम कौन हो? तुम क्या जवाब देंगे। अभी गुरु और सदगुरु का अन्तर तो बच्चों को मालूम पड़ा। सदगुरु अकाल मूर्त हो गये ना बच्चे। और तो सभी गुरु हैं। वह तो अकाल मूर्त नहीं हैं। और सभी मनुष्य को गुरु कहेंगे। वह तो हैं। जो किसको मत देते हैं वह गुरु हो गया। परन्तु सदगुरु है एक तो सत्यमत देते हैं। सत्य कौन है? निराकार शिव। किसको समझाते हैं? निराकार शालीग्रामों को इसको कहा जाता है आत्माओं परमात्मा का मेला। क्यों कि समझाने की बात है। आत्माओं, परमात्मा का मेला जब मूलवतन में होता है वहां यह वातावरण नहीं होता। जो इस पुरुषोत्तम संगम युग पर है। इसको कहेंगे शिव बाबा पढ़ाते हैं। यह सभी का बाप है। तुम सभी मिल कर कहेंगे ओ बाबा। यह कहेंगे ओ बच्चे। ओ बेटे। यह स्मृति में रहना है। इसको कहा जाता है सुमिर सुमिर सुमिर सुख पाओ। फिर तुम्हारे जो भी कल कलेश है जो पतित बने हो सभी मिटेंगे तन के। फिर तो यह कल-कलेश आवेंगे ही नहीं। फिर आत्मा भी होंगे शरीर भी होंगा फिर तो कल कलेश नहीं होंगे। सतयुग के मनुष्य को देवता कहा जाता है। देवताएं कैसे बैठते हैं। बुझना नहीं है। यह गंजिल है अभी जो बाप समझाते हैं जब तुम घंटे-घोरी में घाट-घाट में जाते हो तो अनेक प्रकार के मनुष्य देखते है तो देखें2कर यह समझ कम हो जाती है। यहां बाप बच्चों को कितने अकलमन्द बनाते हैं। कौन अकलमन्द बनाते हैं? आत्मा शरीर द्वारा। यह भी शरीर द्वारा बैठ कर के सिखलाते हैं। ब्रह्मा कुछ भी देता नहीं है वह भी अन्दर में कहते हैं बाबा। बाबा कहने से ही बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा से तुम विश्व का मालिक बनते हो। राज्य लेते हो कल्प 2, कितनी खुशी होनी चाहिए इस पढ़ाई में। फिर पढ़ाई कब भूली जाती है क्या। वह पढ़ाई पढ़ते हैं तो दूसरे दर्जे में ट्रान्सफर होते हैं। इस पढ़ाई से नई दुनिया में जाते हैं। तुम जानते हो अ बाबा अमरलोक की कथा सुनाकर अमर बना रहे है। बाप समझाते हैं वहां काल नहीं खाते हैं। उसको अमरलोक कहा जाता है। बाबा कहते हैं तुम मेरे बच्चों में आत्मा हूं। मैं आत्मा हूं-, मैं बाबा का बच्चा हूं। मैं कोई शरीर नहीं हूं इस पर नाम पड़ता है। मैं तो शिव बाबा का बच्चा हूं। अभी बाबा से वर्सा लेते हैं। यह भक्तिमार्ग नहीं है। एक है बाप सभी आत्माओं का। यहां एक बाप मिलता है जिसको पहचानते हैं। आगे नहीं जानते थे। कुत्ता बिल्ला सभी में समझते थे। इतने बेसमझ बन गये थे। भक्ति मार्ग में सभी राज-भाग गंवा दिया जैसे भेड़ बैप्स बन गये। अभी छीछी से गुड2 बन रहे हो। हम फूल थे ड्रामा अनुसार कांटे बन गये। फूल से कैसे कांटे बनते हो समझ होनी चाहिए। अभी संगम पर बैठे हो। फिर अपने देश में जाते हो। संगदोष में क्या2 कर बैठते हैं। अच्छा आज चक्र को ड्रील यहां ही पूरी करते है। अच्छी तरह से समझना है समझाना है धारण करना है। यहां बैठे हो लाईट हाउस बन बैठते हो। घर को जान गये राजधानी को जान गये। यह तो पराई राजधानी में आकर पड़े हो। अच्छा बच्चों को गुड मार्निंग और नमस्ते। ******

-: : ओमशान्ति: : -